नीली क्रांति के साथ अर्थ क्रांति

मात्स्यिकी क्षेत्र का कायाकल्प

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना

सत्यमेव जयते

मत्स्यपालन विभाग
मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय
भारत सरकार

"हमारी महत्वकांक्षी योजना नीली क्रांति का उद्देश्य मत्स्य पालन क्षेत्र की असीम संभावनाओं का दोहन करना और हमारे कठिन परिश्रमी मछुआरों तथा मत्स्य किसान भाइयों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाना है।"

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

विषय सूची

1.	नीली क्रांति योजना : परिवर्तन प्रवाह	1–2
2.	प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पी.एम.एम.एस.वाई)	3–4
3.	पी.एम.एम.एस.वाई. के अन्तर्गत महत्वपूर्ण सुधार तथा पहल	5
3.1	पी.एम.एम.एस.वाई. के अन्तर्गत मात्स्यिकी क्षेत्र में अब तक का अधिकतम निवेश	6
3.2	सरकार की पहल	7
3.3	प्रोद्योगिकी संचार – प्रति बूंद अधिक फसल	8–9
3.4	वैकल्पिक सतत आजीविकाऐं	10
3.5	भूमि और जल का सदुपयोग	11
3.6	उद्यमी मार्गदर्शक प्रारूप	12
3.7	रोजगार सृजन और आजीविका समर्थन	13
3.8	दोगुने मत्स्य निर्यात का संकल्प	14
3.9	वित्तीय समावेश	15–16
3.10	मात्स्यिकी क्षेत्र में आधुनिक अवसंरचना	17–18
4.	वर्ष 2024–25 तक प्रत्याशित परिणाम तथा फायदें	19

नीली क्रांति योजनाः
परिवर्तन प्रवाह

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कुशल नेतृत्व में जहां मात्स्यिकी क्षेत्र में आमूल–चूल सुधार एवं विकास पर ध्यान केन्द्रित किया गया है, वहीं मछुआरों, मत्स्य किसानों तथा अन्य हितधारकों का सामाजिक–आर्थिक कल्याण भी सुनिश्चित किया गया है।

नीली क्रांति योजना

मात्स्यिकी के एकीकृत विकास और प्रबंधन के लिए नीली क्रांति योजना वित्त वर्ष 2015–16 में आरंभ की गई थी जिसका 5 वर्ष की अवधि के लिए केन्द्रीय परिव्यय 3,000 करोड़ रूपये था। सरकार द्वारा नीली क्रांति योजना के माध्यम से निरन्तर किए जा रहे प्रयासों से उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल हुई है। इस प्रकार, मात्स्यिकी क्षेत्र ने 10.87% की एक प्रभावशाली औसत वृद्धि दर हासिल की जबकि इसी अवधि के दौरान सकल घरेलु उत्पादन में 7% की वृद्धि हुई।

स्रोत– सी.एम.एफ.आर.आई, कोच्ची

समुद्री मछली पिंजड़ा कोच्ची, केरल

इसके अलावा, मत्स्य उत्पादन 142 लाख टन (वित्त वर्ष 2019–20) एवं समुद्री उत्पादों के 46,663 करोड़ रूपये के निर्यात के साथ अब तक के अधिकतम स्तर पर पहुँच गया है।

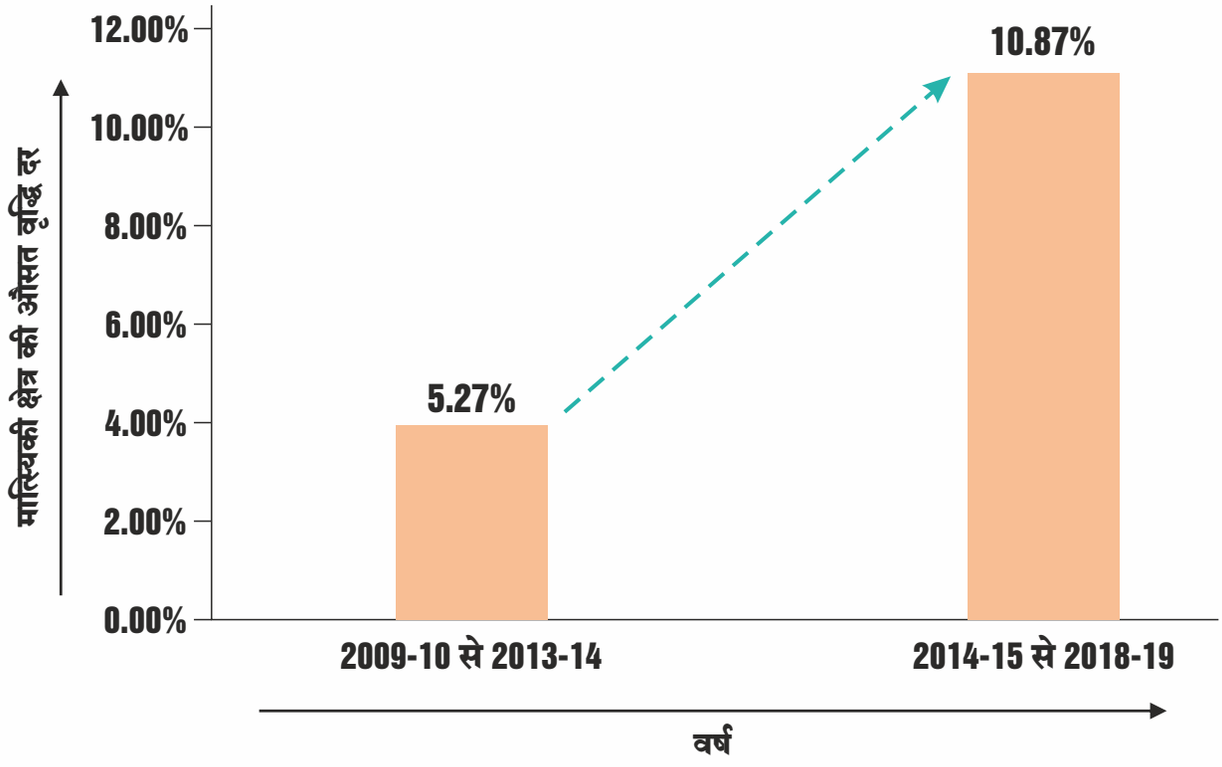

मत्स्ययन जलयान, तमिलनाडु

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजनाः मात्स्यिकी क्षेत्र में अंतरालों का निराकरण

नीली क्रांति योजना मात्स्यिकी क्षेत्र को आर्थिक रूप से व्यावहारिक तथा मजबूत बनाने की दिशा में पहला कदम है। हालाकि, मात्स्यिकी क्षेत्र की पूरी क्षमता का दोहन करने हेतु और अधिक प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। इस क्षेत्र की समग्र मूल्य श्रृंखला के क्रिटिकल अंतराल को दूर करने के लिए मत्स्य उत्पादन तथा गुणवत्ता नियंत्रण, पोस्ट–हार्वेस्ट अवसंरचना, ट्रेसेबिलिटी एवं बाजार संबंधी में सुधार करने की आवश्यकता है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए, भारत सरकार ने जहां मात्स्यिकी क्षेत्र को नई उचाईयों तक ले जाने के लक्ष्य को हासिल करने में सहायता के लिए प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पी.एम.एम.एस.वाई) का विचार किया है वहीं मछुआरों, मत्स्य किसानों तथा अन्य हितधारकों के सामाजिक आर्थिक कल्याण को भी सुनिश्चित किया है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना का शुभारंभ

पी.एम.एम.एस.वाई.: मात्स्यिकी रूपांतरण की गाथा

''प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना'' (पी.एम.एम.एस.वाई) एक सर्वोत्कृष्ट योजना है जो आत्मनिर्भर भारत पैकेज के अन्तर्गत एक नई अग्रणी पहल है।

स्रोत: मत्स्यपालन विभाग, असम सरकार

फार्म पांड का निर्माण, भालागुड़ी गांव, वास्का जिला, असम

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना केन्द्र प्रायोजित ''नीली क्रांति'' योजना की सफलताओं के आधार पर बनाई गई है, जिसका उद्देश्य मात्स्यिकी क्षेत्र को नई उंचाइयों तक ले जाना है। इसके बहु–आयामी हस्तक्षेप और मात्स्यिकी मूल्य श्रृंखला गतिविधियां जैसेः उत्पादन और उत्पादकता, गुणवत्ता, प्रौद्योगिकी अवसंरचना तथा प्रबंधन के साथ पी.एम.एम.एस.वाई. का लक्ष्य मात्स्यिकी क्षेत्र का रूपांतरण करना है, जिसमें मछुआरों, मत्स्य किसानों तथा अन्य हित धारकों की आर्थिक समृद्धि प्रमुख है।

चांडिल डैम, जिला सरायकेला– खरसावाँ, झारखंड, में मत्स्य पिंजरा पालन

अध्याय - 3

पी.एम.एम.एस.वाई. के अन्तर्गत महत्वपूर्ण सुधार तथा पहल

- मूल्य श्रृंखला में निवेश को बढ़ाना
- प्रौद्योगिकी समावेशन
- नीति समर्थन
- वित्तीय समावेश
- वैकल्पिक आजीविका तथा उद्यमिता
- भूमि और जल का उत्पादक उपयोग
- समूह आधारित दृष्टिकोण का विकास

पी.एम.एम.एस.वाई. के अन्तर्गत मात्स्यिकी क्षेत्र में अब तक का अधिकतम निवेश

विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों जैसे नीली क्रांति, मात्स्यिकी तथा जल कृषि अवसंरचना विकास निधि (एफ.आई.डी.एफ) एवं प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पी.एम.एम.एस.वाई.) के अन्तर्गत मात्स्यिकी क्षेत्र में 30,572 करोड़ रूपये का निवेश

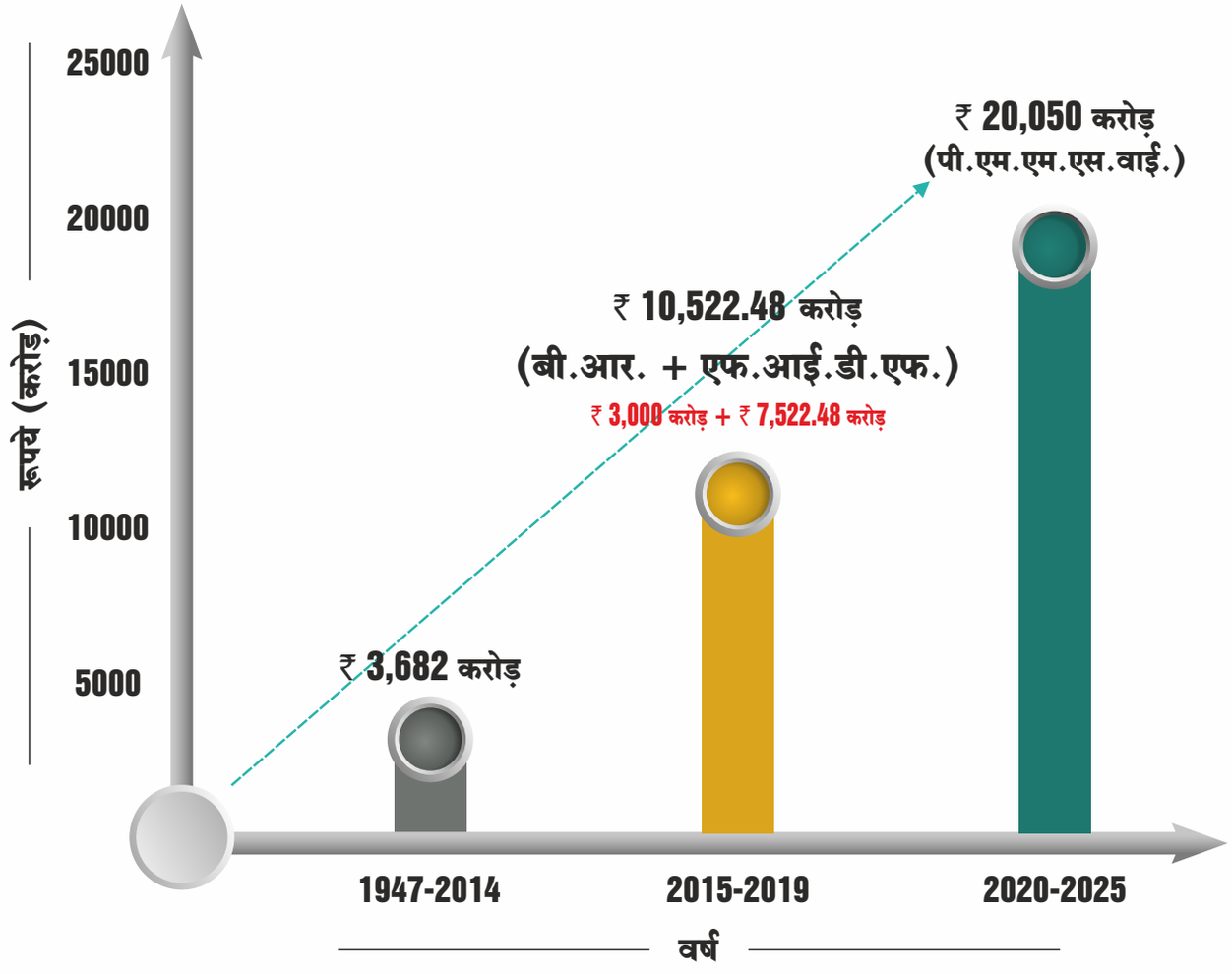

पी.एम.एम.एस.वाई. के अन्तर्गत 5 वर्षों के दौरान मात्स्यिकी क्षेत्र में **20,050 करोड़ रूपये** की राशि का प्रवाह होगा जो इस क्षेत्र में **अब तक का सबसे अधिक निवेश है।**

सरकार की पहल

2015–16	नीली क्रांति योजना के माध्यम से 3,000 करोड़ रूपये का परिव्यय
2017–18	राष्ट्रीय समुद्री मत्स्य नीति का शुभारंभ
2018–19	7,522 करोड़ रूपये की अक्षय निधि के साथ मात्स्यिकी और जल कृषि अवसंरचना विकास निधि (एफ.आई.डी.एफ.) का शुभारंभ
2018–19	मछआरों तथा मत्स्य किसानों के लिए किसान क्रेडिट कार्ड सुविधा का विस्तार
2018–19	मत्स्य पालन विभाग का सृजन
2019–20	मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय का गठन
2020–21	प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पी.एम.एम.एस.वाई.) का शुभारंभ

उच्च संचय धनत्व के साथ जलाशय मत्स्य पिंजरा पालन, झारखंड

प्रौद्योगिकी संचारः
प्रति बूँद अधिक फसल

पी.एम.एम.एस.वाई. में "प्रति बूंद अधिक फसल" का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रौद्योगिकी संचार और उचित जल प्रबंधन द्वारा मूल्य श्रृंखला में क्रिटिकल अंतरालों को दूर करने पर विशेष बल दिया गया है।

जल कृषि के विस्तार गहनता और विविधता के लिए 2,841 करोड़ रूपये के निवेश की योजना

बॉयोफ्लॉक टैंक, अरनिया जिला, जम्मू और कश्मीर

पी.एम.एम.एस.वाई. के अन्तर्गत नई प्रौद्योगिकीयाँ

- पुनः चक्रित जल कृषि तंत्र
- बॉयो फ्लॉक
- एक्वापानिक्स
- उच्च घनत्व तालाब जल कृषि
- एकीकृत बहु स्तरीय जल कृषि (आई.एम.टी.ए.)
- पेन जल कृषि

पुनः चकित जल कृषि तंत्र इकाई अवनर ग्राम, त्रिशूर जिला, केरल उत्पादन क्षमता : 50–80 किलोग्राम /मी.^{3}

गहरे समुद्र के मत्स्ययन जलयान

परंपरागत मछुआरों के लिए उच्च आय प्रवाह

जलयान प्रकार	वार्षिक लाभ
मोटर चालित जलयान	3 लाख रूपये
यांत्रिक जलयान	8–10 लाख रूपये
आधुनिक डीप–सी मत्स्ययन जलयान	32 लाख रूपये

मोटर चालित मत्स्ययन जलयान, कोच्ची बन्दरगाह

आधुनिक डीप–सी मत्स्ययन जलयान, कोच्ची बन्दरगाह

यांत्रिक मत्स्ययन जलयान, कोच्ची बन्दरगाह

पी.एम.एम.एस.वाई. 'मेक इन इंडिया' को बढ़ावा

- मत्स्ययन जलयानों का आधुनिकी करण
- कम लागत के देशी मत्स्ययन जलयान
- मदर वेसल्स

वैकल्पिक सतत आजीविकाऐं

- परंपरागत मछुआरों के जीवन की संरक्षा, सुरक्षा और आजीविका के लिए **समुद्री जल कृषि**
- अगले दस वर्षों में **25% समुद्री मछुआरों** को खारा जल कृषि की ओर शिफ्ट किया जाना
- **पिंजरा कृषि और समुद्री शैवाल कृषि को बढ़ावा देने हेतु 1,276 करोड़ रूपये** की राशि के निवेश की योजना
- समुद्री शैवाल की खेती द्वारा **तटीय मछुआरा महिलाओं** के लिए बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन की संभावना

स्रोत: मत्स्यपालन विभाग, तमिलनाडु

समुद्री शैवाल की खेती, मंडप्पम तट, तमिलनाडु

समुद्री मछली पिंजड़ा पालन
कम जोखिम, अधिक लाभ

गतिविधि	पूंजीगत लागत	निबल आय प्रतिवर्ष
परंपरागत मत्स्ययन जलयान	5 लाख रूपये	1.2 लाख रूपये
पिंजड़ा पालन (कोबिया)	5 लाख रूपये	1.8 लाख रूपये प्रति पिंजरा

संवहनीय मत्स्य आखेट प्रणाली को बढ़ावा देने, पर्यावरण संबंधी चुनौतियों को कम करने और तटीय मछुआरों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार हेतु **100 तटीय मत्स्ययन गांव** विकसित करने के लिए **750 करोड़ रूपये** के निवेश की योजना

भूमि और जल का उत्पादक उपयोगः
ऊषर भूमि से समृद्ध भूमि की ओर

जलीय कृषि के लिए **क्षारीय और लवणीय** भूमि के उत्पादक के उपयोग हेतु **576 करोड़ रूपये** के निवेश की योजना।

क्षारीय / लवणीय भुमि में झींगा पालन, रोहतक, हरियाणा

- मत्स्य निर्यात को बढ़ावा देने के लिए एण्ड टू एण्ड लिंकेज के साथ एक्वा हब का विकास।
- अगले 5 वर्षों में 10 लाख हेक्टेयर के जलाशय और वेटलैंड में मात्स्यिकी के विकास हेतु 520 करोड़ रूपये का निवेश।

मत्स्य पिंजरा पालन गतिविधि, कारापूझा डैम, वायनाड, केरल

उद्यमी मार्गदर्शक प्रारूप

पी.एम.एम.एस.वाई. का उद्देश्य मात्स्यिकी क्षेत्र में निजी क्षेत्र की सहभागिता के लिए एक अनुकूल परिवेश का सृजन करना, उद्यमिता तथा परिवर्तनात्मक तैयार करना है

नये प्रयोग, स्टार्ट–अप्स, और इनक्यूवेशंस एवं युवाओं की व्यवसाय प्रारूप में सहभागिता से मात्स्यिकी और जल कृषि के क्षेत्र में उद्यमिता को बढ़ावा दिया जाना है।

फिश ड्रायर द्वारा मत्स्य प्रसंस्करण में सम्मिलित महिलाऐं, कोच्ची, केरल

उद्यमिता बढ़ाने हेतु युवाओं का सशक्तिकरण

- स्टार्ट अप चुनौती का आयोजन
- प्रौद्योगिकी इनक्यूबेशन केन्द्र का विकास
- प्रत्येक एक्वापार्क में एक मत्स्य इनक्यूबेशन सेंटर
- स्टार्ट–अप्स / एकीकृत इकाइयों के लिए पी.एम.एम. एस.वाई. के अन्तर्गत सहायता का आकर्षक पैकेज

रोजगार सृजन और आजीविका समर्थन

पी.एम.एम.एस.वाई. के अंतर्गत समुद्री शैवाल की खेती, सजावटी मत्स्यपालन, ईको–टूरिज्म, समुद्र आधारित हस्तशिल्प, मत्स्य मूल्य वर्धन/ अन्य समुद्री कच्च माल के लिए मूल्य संवर्धन के माध्यम से वैकल्पिक आजीविका के सृजन को बढ़ावा।

मोबाइल वैन (झारखंड)

मोबाइल वैन (उत्तर प्रदेश)

- **55 लाख** रोजगार के अवसरों का सृजनः 15 लाख प्रत्यक्ष रूप से एवं 40 लाख संम्बधित गतिविधियों द्वारा।
- समुद्री तथा अन्तर्देशीय क्षेत्रों में प्रतिबंध/लीन अवधि के दौरान **6 लाख परिवारों** को आजीविका तथा पोषण सहायता का प्रावधान

तालाब में मत्स्य अखेट हेतु जाती महिलाऐं, फ़क़ीरपड़ा ग्राम, खुर्दा जिला, ओडिशा

स्रोत— सी.आई.एफ.ए., भुवनेश्वर, ओडिशा

दोगुने मत्स्य निर्यात का संकल्प

भारत सी–फूड के अग्रणी निर्यातक देशों में से एक है। जिसमें समुद्री उत्पादों का निर्यात 12.89 लाख मीट्रिक टन है एवं वित्त वर्ष 2019–20 के दौरान निर्यात से कुल आय 46,663 करोड़ रूपये (6.73 बिलियन अमेरिकी डॉलर) थी।

9.71% मत्स्य निर्यात (मूल्य) में औसत वार्षिक वृद्धि

1st झींगा निर्यात में

4.35% वैश्विक निर्यात में हिस्सा

4th सी–फूड निर्यात में

पी.एम.एम.एस.वाई का उद्देश्यः दोगुना मत्स्य निर्यात
(2019–20) 46,663 करोड़ रूपये 1 लाख करोड़ (2024–25)

- प्रजातियों के विविधीकरण पर विशेष ध्यान केन्द्रित करना, मूल्य वर्धित उत्पादों का प्रोत्साहन अवसंरचना तथा मूल भूत सुविधा हेतु सहयोग, विपणन और ब्रांड इंडिया को बढ़ावा देना।
- **4 मत्स्य प्रजातियों पर विशेष ध्यानः** तिलापिया, पेंगासिस, सी–बास तथा मड क्रैब

स्रोत : सी.आई.एफ.टी, कोच्ची

झींगा प्रसंस्करण इकाई, कोच्ची, केरल

वित्तीय समावेश

भारत सरकार ने मछुआरों, मत्स्य किसानों और अन्य हितधारकों के वित्तीय समावेश के लिए महत्वपूर्ण पहल की है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोजी जी कन्या कुमारी में चक्रवात प्रभावित मछुआरों के परिवार के सदस्यों की समस्या सुनते हुए

भारत सरकार ने वित्त वर्ष 2018–19 से मछुआरों एवं मत्स्य किसानों की सहायतार्थ किसान क्रेडिट कार्ड (के.सी.सी) सुविधा का विस्तार किया है ताकि मत्स्य किसानों को कार्य करने हेतु एवं अल्पकालिक क्रेडिट आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु ऋण उपलब्ध करवाया जा सके।

मत्स्य किसान पी.एन.बी. बैंक में के.सी.सी. सुविधा प्राप्त करते हुए, उत्तराखंड

मछुआरों तथा मत्स्य किसानों के वित्तीय समावेश के लिए अनेकों पहल की जा चुकी है।

1 जलयान/नौका बीमा

मात्स्यिकी क्षेत्र में पहली बार मत्स्ययन जलयानों के लिए बीमा सुरक्षा का प्रावधान

स्रोत : सी.आई.एफ.टी, कोच्ची, केरला

मछुआरों के लिए जाल एवं नौका हेतु सहायता, केरल

2 मछुआरों के लिए सामूहिक बीमा दुर्घटना योजना में मृत्यु

होने और स्थायी रूप से पूर्ण अशक्त होने की दशा में 5 लाख रूपये, स्थायी रूप से आंशिक अशक्त होने की दशा में 2.50 लाख रूपये और अस्पताल में भर्ती होने की दशा में 25,000 हजार रूपये की बीमा सुरक्षा योजना का प्रावधान।

आजिविका हेतु समुद्र में मत्स्य आखेट, तमिलनाडु

मात्स्यिकी क्षेत्र में आधुनिक अवसंरचना

मात्स्यिकी क्षेत्र में अवसंरचना विकास के लिए अब तक का सबसे अधिक निवेश **7,710 करोड़ रूपये**

मत्स्ययन बन्दरगाह, चैन्ने पोर्ट

- मत्स्ययन बन्दरगाह तथा मछली उतराई केन्द्र के लिए 8000 करोड़ रूपये
- कोल्ड चेन और मार्केट अवसंरचना के लिए 2400 करोड़ रूपये।

मूल्य प्राप्ति के लिए आरंभ की जाने वाली महत्वपूर्ण गतिविधियां

गंगा और ब्रहमपुत्र नदियों के किनारे अन्तर्देशीय मत्स्ययन बन्दरगाहों तथा मछली उतराई केन्द्रों को प्रोत्साहन

- पी.एम.एम.एस.वाई. सागरमाला और एफ.आई.डी.एफ. के अन्तर्गत 61 मत्स्ययन बन्दरगाह तथा मछली उतराई केन्द्रों का विकास एवं आधुनिकीकरण।
- मत्स्ययन बन्दरगाह तथा मछली उतराई केन्द्रों को आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र के रूप में प्रोत्साहन।

पूम्पूहार, आधुनिक मत्स्ययन बन्दरगाह नागापटिट्नम, तमिलनाडु

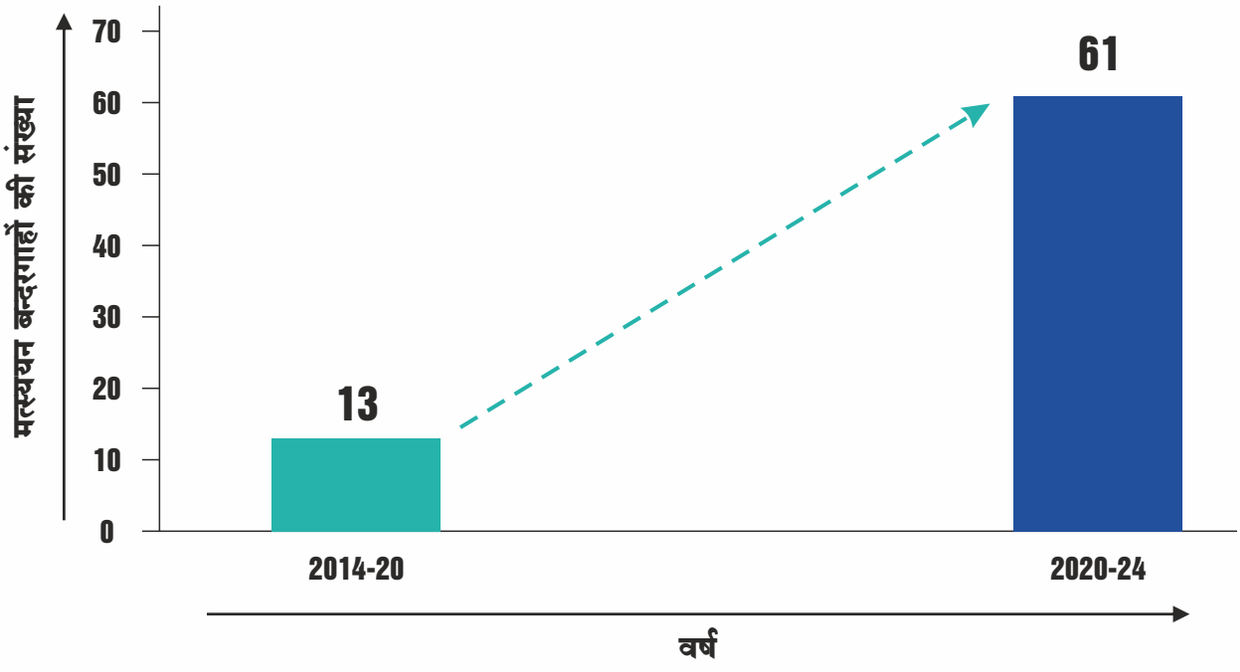

वर्ष 2024–25 तक प्रत्याशित परिणाम तथा फायदें

मत्स्य उत्पादन (लाख टन)

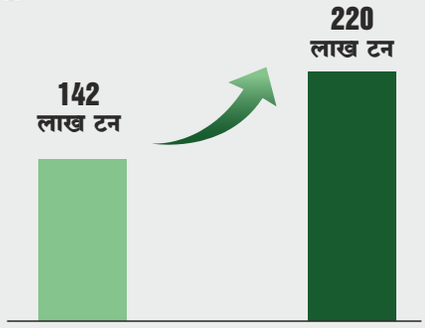

मत्स्य उत्पादन की औसत वार्षिक वृद्धि दर (%)

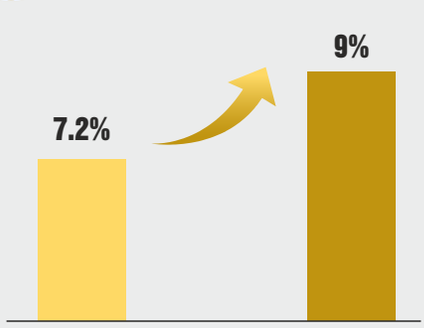

औसत जलीय कृषि उत्पादकता (टन/हेक्टेयर)

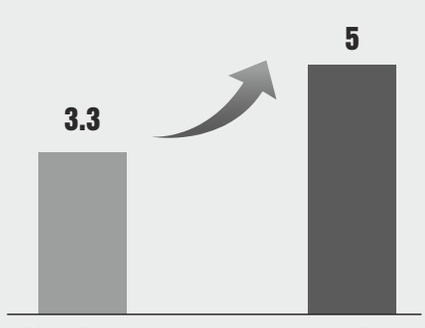

रोजगार सृजन (लाख)

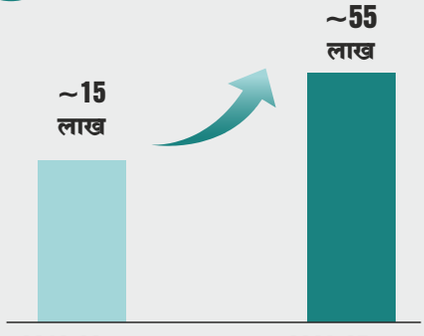

प्रति व्यक्ति मछली की खपत (किलोग्राम)

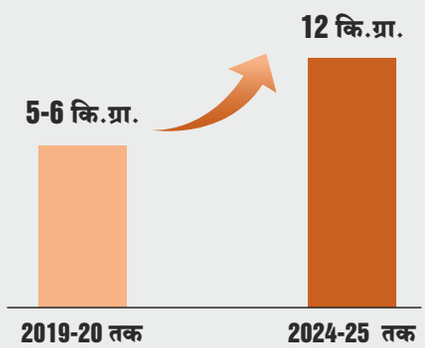

निर्यात (करोड़ रूपये)

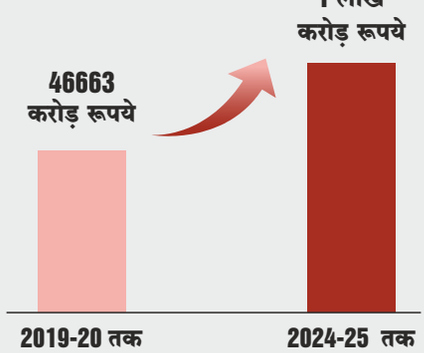

समाचार में

PM launches Matsya Sampada Yojana, says scheme will double fish exports in 3-4 years

EXPRESS NEWS SERVICE
NEW DELHI, PATNA,
SEPTEMBER 10

PRIME MINISTER Narendra Modi on Thursday launched the PM Matsya Sampada Yojana, which aims to double fish exports in three-four years.

Launching the scheme via video-conference, the PM said, "Today the scheme is being launched in 21 states across the country. Over Rs 20,000 crore will be spent on this in the next 4-5 years. Works worth Rs 1,700 crore are being started today. Under the scheme, several facilities have been inaugurated in Patna, Purnia, Sitamarhi, Madhepura, Kishanganj and Samastipur."

This is the first such comprehensive plan to promote fisheries in the country, he said, adding, "The goal is to double fish exports in the coming 3-4 years."

PM Narendra Modi at the launch of the scheme. *PTI*

After opening his speech in Bhojpuri, Modi switched to Hindi to say: "The thinking behind launching sundry schemes today is to ensure that our villages should become India of 21st century and the strength of Atmnirbhar Bharat."

Bihar Chief Minister Nitish Kumar, Deputy Chief Minister Sushil Modi and Union minister Giriraj Singh joined the launch programme from Patna via video-conference.

Under the new scheme, fish producers will get new infrastructure, modern equipment, and new markets will be provided, Modi said. "This will increase earning opportunities through farming as well as other means." The scheme will boost fish, milk and honey production, paving the way for blue, white and sweet revolutions, he said.

The PM also launched other initiatives for fisheries, dairy and animal husbandry including e-GOPALA app, which will provide information "related to cattle care, from productivity to its health and diet". The app will enable cattle owners to buy and sell animals, said a statement from the government.

The PM said the Centre was looking at taking IVF technique in rearing calves to every village. "A cow generally gives birth to one calf in a year, but there have been experiments in laboratories getting several calves in a year through IVF technique. We intend to extend this technique to every village."

Referring to Mission Dolphin, which was announced on August 15, Modi said, "I learnt that Nitish Babu has been quite excited with the project. I believe if the number of dolphins goes up, it would benefit people living by Ganga." He was referring to the positive impact of rearing dolphins on fishery.

Lauding the work done by the Bihar government, Modi praised Nitish for the scheme to deliver drinking water to every home. "Till four-five years ago, only 2 per cent people were linked to supplied drinking water. This figure has now gone up to 70 per cent and about 1.5 crore households are linked to the scheme," he said.

पीएम ने बुलंद की आत्मनिर्भर भारत की आवाज

बिहार समेत 21 राज्यों के लिए 20,500 करोड़ की मत्स्य संपदा योजना का शुभारंभ किया

राज्य ब्यूरो, पटना : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को 20 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा की प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पीएमएमएसवाई) की शुरुआत करते हुए इससे 55 लाख लोगों को रोजगार मिलने की उम्मीद जताई। वर्चुअल कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि आज 21 प्रदेशों में प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना शुरू हो रही है।

उन्होंने कहा, आज जितनी भी योजनाएं शुरू हुई हैं उनके पीछे सोच यह है कि हमारे गांव 21वीं सदी के आत्मनिर्भर भारत की ताकत और ऊर्जा बनें। इस योजना से मत्स्य निर्यात दोगुना होने के साथ-साथ अधिक से अधिक रोजगार का सृजन होगा और किसानों की आय भी दोगुनी होगी। पीएम मोदी ने इस मौके पर ई-गोपाला एप भी लांच किया।

गुरुवार को हुए वर्चुअल समारोह में प्रधानमंत्री ने कहा कि आजादी के बाद पहली बार इतनी बड़ी राशि का निवेश सरकार पशुपालन, मत्स्य और डेयरी क्षेत्र में कर रही है। देश में पहली बार अलग से मंत्रालय बनाया गया है। लक्ष्य यह भी है कि आने वाले तीन-चार वर्षों में मछली निर्यात को दोगुना किया जाए। गो-पालकों और मछली उत्पादकों से बात करने के बाद मुझे नई ऊर्जा मिली है। इससे पूर्व उन्होंने पटना, मधेपुरा, पूर्णिया, किशनगंज, सीतामढ़ी, समस्तीपुर और बेगूसराय जिले के लिए विभिन्न योजनाओं की घोषणा की।

विधानसभा चुनाव से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना और ई-गोपाला एप लांच करने के दौरान बिहार में वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये रैली को संबोधित किया • एएनआइ

खांटी भोजपुरी अंदाज में बोले पीएम : बिहार के लोगों को संबोधित करने की बारी आई तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का अंदाज खांटी भोजपुरी हो गया। उन्होंने कहा कि रउआ सभे के प्रणाम बा, देसवा खातिर, गांव और व्यवस्था मजबूत करे खातिर, मछली पालन करे खातिर। सैकड़ों करोड़ रुपये की योजना शुभारंभ भईल ह। हमार गांव 21वीं सदी के भारत, आत्मनिर्भर बिहार की ताकत बने। मेरी बात को लिख लीजिए कि पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन क्षेत्र में भविष्य उज्ज्वल है। इसी के साथ उन्होंने विधानसभा चुनाव से पहले बिहार को सौगात देने का सिलसिला शुरू कर दिया। गुरुवार को पशुपालन, मत्स्य और डेयरी से संबंधित 294.53 करोड़ की योजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन किया।

बेहतर काम के लिए नीतीश की सराहना की : बिहार में विकास के लिए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की पीठ थपथपाते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि चार-पांच साल पहले तक सिर्फ दो फीसद घरों को स्वच्छ पेयजल मिलता था। वर्तमान में यह आंकड़ा 70 फीसद हो गया है। बिहार के 60 लाख घरों को नल से जल की आपूर्ति सुनिश्चित हुई है। समारोह को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, उप मुख्यमंत्री सुशील मोदी ने भी संबोधित किया।

ग्रामीणों के परिश्रम की सराहना करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि कोरोना काल में जब सारे काम बंद थे, तब भी गांवों से मंडियों तक दूध-दही, सब्जी-फल, अनाज आदि की आपूर्ति होती रही। बिहार अब उत्तम देसी नस्लों के पशुओं के विकास का केंद्र बन रहा है। आइवीएफ की मदद से एक गाय से कई नस्ल तैयार हो रही हैं।

*अब वह घड़ी आ गई है कि **नीली क्रांति** को अशोक चक्र के नीले रंग में चित्रित किया जाए"*

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

सत्यमेव जयते

मत्स्यपालन विभाग
मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय
भारत सरकार